FOR, U.G. PART-3
PAPER-VI

PARTITION OF INDIA
[PART-2]

# भारत का विभाजन (भाग-2)

लिनलिथगो के बाद वायसराय के रूप में वेवेल आये जिनकी अदम्य इच्छा थी कि भारत "पाकिस्तान-हिन्दुस्तान और प्रिंसिस्तान में बंट जाए। वेवेल ने जिन्ना को महत्व देना शुरू किया। वेवेल ने घोषणा की कि गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी में मुख्यसेनापति को छोड़कर सभी भारतीय सदस्य होंगे जिसमें सवर्ण हिन्दुओं और मुसलमानों की संख्या बराबर होनी थी। शिमला में जुन-जुलाई 1945 में एक सम्मेलन हुआ जिसमें जिन्ना अपने को मुसलमानों का एकमात्र प्रतिनिधि साबित करना चाहते थे। कांग्रेस ने अपने कोटे के तहत दो राष्ट्रवादी मुस्लिमों को नियुक्त करने का प्रस्ताव किया परन्तु जिन्ना इस बात पर अड़ गये कि सभी मुसलमान सदस्य मुस्लिम लीग द्वारा ही मनोनीत किये जाये। अन्त में वेवेल ने सम्मेलन को भंग कर दिया तथा यह स्पष्ट हो गया कि जिन्ना को भारत की संवैधानिक प्रगति को रोक देने का अधिकार है।

1946 ई. के कैबिनेट मिशन ने पृथक पाकिस्तान की मांग को अस्वीकार कर दिया लेकिन संघ जिसके पास विदेश, रक्षा और संचार मामले थे, के अधीन मुस्लिम बहुल प्रांतों का समूह बनाकर तथा समूह के संविधान एवं प्रांतीय संविधान की व्यवस्था कर प्रांतों को पूर्ण स्वशासन देकर अल्पसंख्यकों की समस्या को सुलझाने का प्रयास किया। कांग्रेस ने कहा कि प्रांतों का वर्गीकरण अनिवार्य नहीं स्वैच्छिक होना चाहिए जबकि जिन्ना को अनिवार्य वर्गीकरण में पाकिस्तान दिखाई देता था। लीग ने कैबिनेट मिशन योजना अपनी स्वीकृति वापस ले ली तथा 'लड़कर लेंगे पाकिस्तान,

Scanned with CamScanner

लेकर रहेंगे पाकिस्तान' की युद्ध घोषणा कर दी। उस बैठक की निर्णय के तहत 16 Aug. 1946 ई. को देश के विभिन्न भागों में व्यापक साम्प्रदायिक दंगे-फसाद हुये। बंगाल से शुरू होकर दंगों की ज्वाला नोआखली, बिहार, संयुक्तप्रांत, गुजरात और पंजाब में फैलायी गई एवं एक वर्ष तक दानवता का नंगा नृत्य हुआ। साम्प्रदायिक पागलपन का एकमात्र हल था - विभाजन। मुस्लिम लीग 26 अक्टू. को अंतरिम सरकार में शामिल भी हुई तो इसीलिए कि उसे अन्दर से तोड़ा जाये। इस प्रकार अन्दर और बाहर दोनों ओर पाकिस्तान की लड़ाई चल रही थी। अन्ततोगत्वा 3 जून 1947 ई को माउंटबेटन योजना में भारत की आजादी के साथ-साथ पाकिस्तान की माँग को स्वीकृति मिल गई।

भारत के 'शांतिपूर्ण सत्ता हस्तांतरण' में करीब छः लाख से ज्यादा स्त्री-पुरुष और बच्चे मारे गये तथा करीब डेढ़ करोड़ लोग शरणार्थी हुये। यह संख्या रूस और फ्रांस की हिंसापूर्ण राज्य क्रांतियों में मारे गये लोगों की संख्या से भी ज्यादा है। इस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति के गर्व एवं खुशी, विभाजन के दुःख, उदासी का मिश्रित रूप था। कई लोगों के लिये वर्षों तक आजादी का मतलब रहा - अचानक भड़क उठने वाली एक हिंसा। विभाजन के बाद के कारुणिक दृश्यों के एवं समस्याओं पर इतिहासकारों सहित भारतीय साहित्य में भी काफी चर्चा की गयी है।

भारत विभाजन की अनिवार्यता पर इतिहासकारों के विचार भिन्न-भिन्न हैं। हफीज मलिक और आई. एच. कुरैशी जैसे पुराने इतिहासकार 'द्विराष्ट्र सिद्धांत' को मानते थे। बी. आर. नन्दा जैसे राष्ट्रवादी

इतिहासकार ब्रिटिश सरकार की "फूट डालो और राज करो"
की नीति को विभाजन के लिए उत्तरदायी ठहराते हैं।
राजेन्द्र प्र० कहते हैं कि "पाकिस्तान के निर्माता कवि
इकबाल या जिन्ना नहीं, वरन् मिंटो थे।"

कैम्ब्रिज स्कूल के साम्राज्यवादी इतिहासकार भारतीय
राष्ट्रवाद को कमतर दिखाने की कोशिश की है। उनका
मानना था कि भारतीय समाज सदा से बहुलवादी एवं
विखंडित रहा है, जिसमें टकराव होते रहते थे। ऐसे में
भारत का विभाजन एक ऐतिहासिक घटनाक्रम था।

मार्क्सवादी मूल के कुछ भारतीय तथा
सब-अल्टर्न स्कूल के इतिहासकारों ने भारतीय राष्ट्रीय
आंदोलन की कमियों एवं राष्ट्रीय नेताओं की सीमाओं
पर ध्यान केन्द्रित किया है। विपनचन्द्र साम्प्रदायिकता
से लड़ने की सही रणनीति नहीं अपनाये जाने के लिए
कांग्रेस को दोषी ठहराते हैं। वे कहते हैं कि कांग्रेस ने
हमेशा "शिखर पर एकता" स्थापित करने की कोशिश
की।

भारत विभाजन के कारणों पर आम सहमति बना
लेना काफी कठिन है। यह कहना कठिन है कि कौन
व्यक्तिगत या दलगत रूप से जिम्मेवार था। तीनों ही
प्रमुख दलों - मुस्लिम लीग, कांग्रेस तथा ब्रिटिश सरकार
की जिम्मेवारी विभाजन में किसी न किसी रूप में
आवश्यक है। किसी को इससे पूरी तरह न मुक्त किया
जा सकता है न पूरी जिम्मेवारी उसपर लादी जा सकती
है। जहाँ ब्रिटिश सरकार ने अपनी साम्राज्यवादी हितों
की पूर्ति के लिये मुसलमानों को राष्ट्रीय आंदोलन की
मुख्य धारा से बाहर रखने का प्रयास किया, वहीं कांग्रेस
जो भारत की मुख्य राष्ट्रीय पार्टी थी, साम्प्रदायिकता
के उत्थान को रोकने में असफल साबित हुई। ब्रिटिश

Scanned with CamScanner

सरकार की शह पर जिन्ना की लोकप्रियता बढ़ती गई और 1947 ई. तक आते-आते शर्मिंदित कर देने वाले दंगों के बाद एक विशाल एवं जीवित राष्ट्र के दो टुकड़े कर देने पड़े।

— X —

Scanned with CamScanner